B.C.I.

THE BIGGEST CRIMINAL

OF

ISLAM

[redacted]

जून 2015
हिन्दी संस्करण

Written By – A. A. Siddiqui
(M.C.A.)

ऐ खासये खासाने रसूल , वक्त ए दुआ है।
उम्मत पे तेरी आ के अज़ब वक्त पड़ा है।।
जो दीन बड़ी शान से निकला था वत़न से ।
परदेश में वो आज गरीब्‘ गुरबा है।।

B.C.I. मतलब *S g ✍A h f fBdl q h s l h m e`H k k-*ईस*l*
छोटी सी 29पृष्ठ की किताब को लिखने का मकसद सिर्फ यह है कि आज के दौर में मुसलमानों के उपर जो जुल्मों सितम हो रहा है, जो तकलीफ मुसलमानों को पहुंचाई जा रही है, उसकी तह तक जाने की कोशिश करना है कि आखिर ऐसा क्युं हो रहा है कि लोग मुसलमान को अमन का दुश्मन समझने लगे हैं, मुसलमानों पर जुल्मों सितम व नफरत करने लगे हैं ? आखिर कौन है इन सब का असल जिम्मेदार ?

इस छोटी सी 29पृष्ठ की किताब में मैनें कुछ हदीसें और कुरान की आयात का तर्जुमा महफूम लिया है। इक़बाल के कुछ अशआर भी लिए हैं और कुछ बातें अल्लाह के महबूब बंदे जिन्होंने अपनी जिन्दगी इस्लाम के लिए वक्फ कर दी है, उनके बायानात से मुतास्सिर हो कर मैं इस किताब को लिख रहा हुं।
अब आईये ज़रा सोचिए कि – जो गैर मुसलमान कभी मुसलमानों की मिसाल अपनी महफिलों में दिया करते थे, आज वे हमसे इतनी ज्यादा नफरत क्युं करने लगे हैं?

मेरी गुज़ारिश है कि हिन्दी में लिखते हुए यदि कोई गलती हो गई हो तो अल्लाह भी मुझे माफ करे और आप लोग भी मुझे माफ करेंगे और इन गलतियों व त्रृटियों को नज़र अंदाज करते हुए अहम बात व मकसद की तरफ ध्यान देने की कोशिश करेंगे कि इस्लाम का असल गुनहगार व अपराधी कौन है? और कैसे यह गुनहगार दीन ए हक की तरफ आ सकता है ?

और इस 29पृष्ठ की किताब में ही हम यह भी जानेंगे की –

हमारे नबी ए अकरम मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैही वस्सल्लम) का मुकाम क्या है। आज मौजूदा दौर में अधिकतर मुसलमानों का हाल कैसा है। कौन है मुसलमानों पर हो रही इस नफरत का, इस जुल्मों सितम का असल जिम्मेदार । कैसे एक गुनहगार नेकी की तरफ आ सकता है। और किताब के आखिर में एक हसीन व अनमोल तोहफा है जो हमारे लिए अंधियारे में रौशनी है।

|| इंशा–अल्लाह ||

यह सच है कि दुनिया में आज मुसलमान की सुरते हाल बहुंत ही खराब हो चुकि है। आईये ये जानने की कोशिश करते हैं कि आज के जमाने में इस्लाम के दुश्मनों का काम ऐसे कौन लोग हैं जो आसान कर रहे हैं। शैतान जो मुसलमानों को बहकाने के लिए लगा रहता है, आज वह भी इस ज़माने को देख कर कितना खुश होता होगा और फक्र करता होगा कि मेरा काम तो कितना ही आसान हो गया है, मेरा काम तो उन्ही लोग आसान करने में लगे हैं जिनको बहकाना मेरा (शैतान) का असल व अहम तरीन मकसद रहा है।।

आज हम मुसलमान यह कहते हुए खून के आंसू रोते हैं कि हमारे उपर जुल्मों सितम हो रहा है। हमारे खिलाफ साज़िशें हो रही हैं। लोग हमसे नफरत करने लगे हैं। कोई हम पर भरोसा भी नहीं करना चाहता है।

सदियों से जो लोग सांथ रहा करते थे आज वो हमको अपना पड़ोसी तक नहीं बनाना चाहते हैं। हमसे बात करते समय उनके दिल में मुहब्बत की जगह नफरत होती है। लोग हमें कर्ज नहीं देना चाहते। लोग हमारी मदद नहीं करना चाहते । लोग नौकरी में नहीं रखना चाहते। टेलिविजन या मूवी पर अगर विलेन होता है तो वह मुसलमान के रुप में होता है, जिसके सर पर टोपी और चेहरे पर दाढ़ी होती है।

अगर कोई आतंक की बात करता है तो लोगों के दिमाग में अधिकतर एक मुसलमान की तस्वीर ही नजर आने लगती है कि जिसके सर पर अ़मामा या टोपी होती है, चहरे पर दाढ़ी होती है, कुरता पैजामा पहना होता है और हांथ पर हथियार होते हैं, जो लोगों पर ज़ुल्मों सितम करने के लिए होते हैं ।

क्या हम मुसलमानों ने कभी यह सोचा है कि आखिर इन सब का असल जिम्मेदार कौन है ?

आखिर कौन हैं वो लोग जिनकी वजह से आज सारी दुनिया में इस्लाम बदनाम हो रहे हैं?

कौन हैं वह लोग जिनकी करतूतों के कारण लोग इस्लाम को बदनाम कर रहे हैं?

कौन हैं वह लोग जिनके कारनामों के कारण दुनिया कुरान को दुश्मनी और आतंक फैलाने वाली किताब कहने लगी है ?

मेरी गुज़ारिश है कि इस किताब को सारे मुसलमान पढ़ें। और गैर मुस्लिम भी जरुर पढ़ें। ये 29पेजे़स की किताब उन सभी के लिए फायदामंद होगी जो अमन को पसंद करते हैं और जो चाहते हैं कि एक मुसलमान वैसा ही हो जाये जैसा कि एक सच्चे मुसलमान को होना चाहिए।।

जब आप इस किताब को पढ़ेंगे तो आपको अंदाजा होगा कि हमारे नबी का असल मरतबा क्या है। कुरान का मुकाम क्या है। हम क्या हैं आज ? और हमको असल में कैसा होना चाहिए ?

आप जान सकेंगे कि कौन इस्लाम का सबसे बड़ा अपराधी है ?

आईये समझने की कोशिश करते हैं V g n ` q S g A B?H'
कौन है इस्लाम का A h d l f B q h l k m ` k इस्लाम का B q h l h m ` k
M t l a d q N m d -

अल्लाह के नाम से शुरु करता हुं, जो मालिक है सारे जहान का, जिसके कब्ज़ ए कुदरत में हर चीज है और जिसकी शान बहुंत ज्यादा बुलन्द है, उसके आदेश से सारा ब्रम्हांड काम कर रहा है। लोग इस सर्वशक्तिमान अल्लाह को अलग अलग नामों से पुकारा करते हैं।

याद रखिए कि यह बात कहना कि दुनिया के सारे इंसान अल्लाह ही को अपना पालनहार मानते हैं और इसकी पुजा करते हैं, सत्य नहीं है! दुनिया में अलग अलग धर्म के लोग रहते हैं और कुछ लोग तो किसी धर्म को या खुदा को मानते भी नहीं हैं। आज के दौर में धर्म और खुदा को ऐसे एक दुसरे से जोड़ा जाता है, जैसे सागर को लहरों से। जिस्म को रुह से जोड़ा जाता है।
यदि कोई इंसान यह कहता है कि अल्लाह ने मुझे सेहत दिया – इसका मतलब लोगों के दिमाग में इंसान का मजहब सबसे पहले यह आयेगा कि वह इंसान मुसलमान है । इसी तरह से यदि कोई यह कहता है कि इसु ने मेरी मदद की तो लोगों के दिमाग में फौरन उस इंसान के क्रिश्चन होने की बात पैदा होती है। कोई भगवान का धन्यवाद करे तो उसे हिन्दु समझने लगते हैं।
किन्तु यहां पर यह बात अत्यंत ही महत्वपुर्ण होगी कि यह जरुरी नहीं है कि अल्लाह का नाम लेने वाला मुसलमान और इसु का नाम लेने वाला क्रिश्चन ही होगा। हम लोगों के पहनावे व बातों से ही किसी का धर्म साबित नहीं कर सकते हैं।

लेकिन क्या वाकई में खुदा को धर्म से जोड़कर देखना चाहिए कि हर धर्म के लिए अलग अलग खुदा हैं और वे खुदा ही उनके मानने वालों के पालनहार एवं रचयिता हैं ?

जरा सोचिए कि अगर खुदा सबका अलग अलग होता तो मानव स्वरुप की रचना भी अपने हिसाब से क्यों ना करता कि किसी के पांच आंख किसी के सात कान, किसी के दस पांव और वो भी बड़ी खुबसूरती के सांथ ।
खुदा तो सच में एक ही है और वही सर्वशक्तिमान है जिसकी शक्ति ऐसी है कि वह किसी चीज को होने का हुक्म देता है और वह बस हो जाती है।
मुसलमान जिसे पूजता है उसे अल्लाह कह कर पुकारता है। और कहा जाता है 'लाई लाहा इल्ल लल्लाह' जोकि खुदा के एक होने की गवाही देने के लिए काफी है। अल्लाह के एक होने की गवाही देने हेतु कितना ही आसान है ना ? आप स्वयं कह कर अंदाज़ा लगा सकते हैं।

मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैही वस्सल्लम) –

लाईलाहा–इल्लल्लाह, मुहम्मदु–र्रसूलल्लाह।

अल्लाह कुरान में फरमाता है – ऐ नबी ! हमने आपको सारे आलम के लिये रहमत बना कर भेजा है।
जो इंसान अल्लाह पर ईमान लावे और मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैही वस्सल्लम) के नबी होने का इंकार करता है, कुरान का इंकार करता है, तो वह मुसलमान हरगिज़ नहीं हो सकता। अल्लाह पाक ने अपना संदेश मानव जाति तक पहुंचाने के लिए अपने आखिरी नबी को दुनिया में भेजा जो पहले आ चुके सारे नबीयों व रसूलों से आला हैं और आप मुहम्मद आखिरी रसूल हैं जिनके बाद सिलसिलए नुबुव्वत खत्म हो गया। और अल्लाह ने आप पर कुरान उतारा। जो कि पढ़ने में व याद रखने में काफी आसान है।

कुरान एक पवित्र किताब है जिसके किसी भी वाक्य या आयात का गलत होने का शक नहीं किया जा सकता है। हमारे नबी की मिसाल और तारीफ अल्लाह से बेहतर कोई नहीं कर सकता है। मुहम्मद PBUH जिन्होने अल्लाह के संदेश को इंसानों तक पूरा पूरा पहुंचाया।

और अल्लाह ने आप मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैही वस्सल्लम) को पूरे नव इंसानी के लिए बेहतरीन मिसाल बनाया।

एक बात ध्यान देने वाली है कि मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैही वस्सल्लम) एक ऐसा रौशनी हैं जिसने कुरान पाक नव इंसानी तक पहुंचाया। और अल्लाह के दीन की दावत यानि लोगों को इस्लाम की तरफ बुलाना प्रारंभ किया । तब वे एक मात्र इंसान प्रथम इंसान हुए जिनकी बात सुनकर जिनके जिन्दगी गुजारने के तरीके को देखकर जिनकी सच्ची बातों और कुरान के कथन को सुनकर लोग के दिल इमान से रौशन होने लगे, लोग ईमान लाने के बाद दुसरों को भी इस्लाम की दावत देते रहे और यही वजह रही कि इस्लाम की रौशनी बहुंत ही तेजी से सारी दुनिया में फैल गयी।

मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैही वस्सल्लम) जिन्होने अल्लाह के हुक्म को लोगों तक पूरा पूरा पहुंचाया और एक इस्लामी निजाम कायम कर के दुनिया को दिखा दिया कि दुनिया देखे कि यह है इस्लाम, के जिसके निजाम में सिर्फ अमन व सुकून है।

पुरी दुनिया में इस्लाम ही ऐसा मजहब है जिसका अपना कानूनी निजाम भी है जो लोगों को सिर्फ अमन से रहना ही नहीं सिखाता अपितु अमन से रहने का तरीका भी बताता है।

अल्लाह पर यकीन रखना और मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैही वस्सल्लम) को अंतिम नबी व रसूल मान लेना और दिल से ये यकीन रखना की अल्लाह एक है और मुहम्बद (सल्लल्लाहो अलैही वस्सल्लम) अल्लाह के अंतिम रसूल व महबूब बंदे हैं।

और कुरान अल्लाह की तरफ से मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैही वस्सल्लम) पर उतारी गई एक रौशन किताब है। एक मुसलमान के लिए जरुरी है।

अगर आज हम यह कहें कि मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैही वस्सल्लम) ने डूबते सूरज को वापस फेर दिया था जो कि एक मोजिज़ा था, तो लोग कहेंगे कि ये तो उस समय हुआ होगा आज मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैही वस्सल्लम) की कोई ऐसी चीज साबित करो जो उस समय भी मोजिज़ा/मिरेकल थी और आज भी मिरेकल है।

क्या हम मुसलमान जानते हैं कि पवित्र कुरान ही एक मात्र वह मोजिज़ा/मिरेकल है जिसे हम आज भी दुनिया के सामने पेश कर सकते हैं कि लो देख लो दुनिया वालों ये है कुरान, ए मिरेकल ऑफ इस्लाम।
जिसकी हर एक बात सच्ची है। जिसमें चैलेन्ज है उन लोगों के लिए जो अल्लाह का, उसके रसूल का और कुरान का इंकार करते हैं।
यह कुरान है जिसकी आयात/वाक्य वैज्ञानिकों के शोध का एक विषय बनी हुई है। जिस कुरान की रौशनी में गैर मुस्लिम दुनिया जहान में अपना नाम रौशन करता है और कुरान में कही गयी आयात पर गौर फिक्र करता है यहां तक कि कुरान समझने के लिए वह गैर मुस्लिम अरबी भाषा तक सिखता है और दुनिया के सामने कुरान के आयात में दिन रात रिसर्च करता है,भले ही वह मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैही वस्सल्लम) को न माने लेकिन वह जानता है कि मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैही वस्सल्लम) सच्चा है और उस पर उतरा कुरान सच्चा है और वह मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैही वस्सल्लम) को नबी नहीं मानता है लेकिन मुहम्मद का जरुर मानता है। अपनी रिसर्च से कुरान की आयातों का सत्य होना साबित करता है। दुनिया में अपना नाम करता है।
वह गैर मुस्लिम जानता है कि कुरान में अगर कुछ लिखा है तो यह

सच है और वह उस पर रिसर्च करता है, और आज तक कोई भी रिसर्च कुरान की आयात के खिलाफ साबित ही नहीं हो सका है। वहीं दुसरी ओर आज मुसलमान कुरान से दूर होकर दुनिया में अपने को व इस्लाम को बदनाम करता है।

हम मुसलमान , हम कहां हैं? किस मुकाम पर हैं?
हाय अफसोस! हाय अफसोस! हाय अफसोस!

जरा सोचिये कि हम अल्लाह को मानते हैं, मुहम्मद को मानते हैं, कुरान को मानते हैं लेकिन हम अल्लाह का नहीं मानते, मुहम्मद का नहीं मानते, कुरान का नहीं मानते हैं।

फर्क तो सिर्फ इस 'को' और 'का' है।

आप स्वयं के दिल में झांक कर सोचें कि कितनी बार हमने कुरान को पढ़ा। कितनी आयात याद रखी।
कितनी आयातों को अनुवाद संहिंत याद रखा।
कितनी आयातों पर अमल किया, और कितनी आयात को दुसरों तक पहुंचाया।

याद रखिये कि मुसलमानों को हुक्म है कि –
पहुचा दो (लोगों तक कुरान) , अगरचे एक आयत ही क्युं ना हो ।।

मेरे प्यारे नबी मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैही वस्सल्लम) के नाम पर हम अपने होंठों को चुमते हैं। उनके नाम पर मर मिटने का दावा करते हैं। और जब आजान की आवाज कानों तक सुनाई देते हुए कहती है कि –

आओ नमाज पढ़ने के लिए, आओ नमाज पढ़ने के लिए
आओ कामियाबी पाने के लिए, आओ कामियाबी पाने के लिए ।।

तब हम अल्लाह के गुनाहगार आजान को अनसुनी कर देते हैं। हदीस का महफूम है कि हमारे प्यारे नबी ने दुआ कि जिसका महफूम है –

ऐ अल्लाह! हलाक हो जाए वो शख्स जिसने मेरा नाम सुना और मुझपर दुरुद ना पढ़ा।

और तो और एसे लोगों को आते देख हम छिपने लगते हैं जो इस्लाम की दावत देता है, लोगों को दीन की महफिलों में शामिल होने की दावत देता है।

क्या हम वही मुसलमान हैं जो सिर्फ तकबीर के नारे लगाने वाले, चौक चौराहों को जाम करने वाले, लोगों को नुकसान पहुंचाने वाले, चोरी करने वाले, झूठ बोलने वाले, बेसब्री दिखाने वाले,मुसलमानो के बीच में ही फसाद पैदा करने वाले, अपने को जन्नती और दुसरे मुसलमानों को दोजख का सर्टीफिकेट बांटने वाले, फितना व फसाद फैलाने वाले, अमानत में खयानत करने वाले, नमाज रोजा जकात से बचने वाले हो गए हैं। जुआ व नशा करने वाले। धोखा देने वाले। मां बाप का दिल दुखाने वाले हो गए हैं। इन सब के सांथ हम सीना ठोंक कर अल्लाह व रसूल से मुहब्बत का दावा करते हैं। हमसे बढ़कर कोई नहीं है, यह कहते हुए फिरका परस्ती को तवज्जोह देते हैं।

आज मुसलमान अपनी बदहाली पर रोता है। मुसलमानों का चैन सुकून छिन गया है, गुलामी के अंधेरों में जकड़ा जा रहा है। अपनी जान और इज्जत को चंद दुनिया की दौलत के बदले बेच रहा है, क्या वाकई हम जिस नबी के नाम सुनकर झूम जाते हैं, जिस दीन के लिए अपना सब कुछ लुटा देने की बात करते हैं, क्या यह सब सिर्फ जबानी बात करके हम अल्लाह को धोखा देना चाहते हैं? नहीं हम अपने आप को धोखा दे रहे हैं।

आईये कुरान की तरफ, सुरह आ’राफ की तरफ तवज्जो करते हैं और देखते हैं कि अल्लाह की खास रहमत किन – किन लोगों पर होगी और क्या काम वो लोग करेंगे जिनसे उन लोगों को अल्लाह की

खास रहमत मिलेगी।

याद रखें —— वैसे तो हर शय का वजूद अल्लाह की रहमत से है । "लेकिन अल्लाह की एक खास रहमत भी है जिसे अल्लाह लिख रखेगा उन लोगों के लिये जो अल्लाह के नबीये उम्मी आखिरी रसूल के उपर इमान लायेंगे।
ये आखिरी रसूल जब आवेंगे और वो नेकी का हुक्म देंगे, बदी से रोकेंगे, पाकिजा चिजों को हलाल करार देंगे और नापाक चिजों को हराम करार देंगे, नो–इंसानी के उपर जो बोझ रहेगा जो उस वक्त होंगे वो उनको उतारेंगे ।"

" तो जो लोग उस मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैही वस्सल्लम) पर इमान लायेंगे, उनकी ताज़ीम व तौकीर करेंगे। उनकी मदद करेंगे और जो नूर उनके सांथ उन पर नाजिल किया जायेगा यानि कुरान उसकी पैरवी करेंगे तो वो लोग होंगे जों फलाह पाने वाले होंगे, अल्लाह की खुशुशी रहमत उन लोगों को मिलेगी। "

आज के दौर में दुनिया में करोड़ों की संख्या में मुसलमान हैं। अगर कोई गैर मुस्लिम कलमा शहादत कहकर इस्लाम में आना चाहता है तो उसके कलमा कहने के बाद हम उस गैर मुस्लिम को मुसलमान समझने लगते हैं।

और आज के दौर में अधिकतर मुसलमान का रहन सहन पहनावा वैसा ही होता है जैसा कि एक गैर मुस्लिम का होता है फर्क तो सिर्फ कलमें तैयब,कलमए शहादत का ही रह गया है। हम एक मुसलमान को देखकर यह अंदाजा भी नहीं लगा सकते हैं कि वह शख्स मुसलमान है या कोई और।
हर बुरा काम आज एक मुसलमान कर रहा है जो अल्लाह और रसूल

के हुक्म के खिलाफ है। कुरान के खिलाफ है।
लेकिन है तो मुसलमान, क्यों हैं? क्योंकि या तो उसके मां बाप मुसलमान थे तो विरासत में मुसलमान हो गया या कलमा पढ़ कर गैर मुसलमान से मुसलमान हो गया । लेकिन ये इमान इंसान की सीरत और कीरदार पर असर अंदाज नहीं हो सकता। और यही कारण है कि हम आज देख रहे हैं कि
मुसलमान झूठ भी बोल रहा है।
लोगों का हक भी मार रहा है।
बेईमानी भी कर रहा है।
शराब के जाम भी छलका रहा है।
चुगली भी कर रहा है।
चोरी भी कर रहा है।
जिनाकारी में मुब्तिला भी हो रहा है।
नाच गाने भी कर रहा है।
मां बाप की ना फरमानी भी कर रहा है।
बीवी अपने शौहर को धोका देने लगी है तो शौहर अपनी बीवी से बेवफाई कर रहा है। दुनिया में फसाद फैला रहा है।
भाई–भाई से नफरत कर रहा है।
फिरका परस्ती को बढ़ावा और भाई चारा से दूर हो रहा है।
दिल में दुसरे मुसलमानों के लिए नफरत का जहर भरा रहता है।
अगर दौलत वाला है तो दीनदारी में पीछड़ा हुआ है। दुनिया के हर बुरे व गलत काम में मुसलमान मुब्तिला है।
अपनी पूरी जिन्दगी नमाज को छोड़ छोड़ कर दौलत कमाने में लगा दिया है फिर भी बदहाल और परेशान है। अमन और सुकून की तलाश पाने के लिए खूब रुपये खर्च करता है फिर भी उसको चैन व सूकून नहीं मिलता । कुरान पाक को अपने घर में अपनी पहुंच से इतनी दूर रखता है कि सिर्फ नजर ही पहुचेगी। काफी साफ और जतन कर रखता है, उसको चुमता तो है, सीने से भी लगाता है लेकिन उसको खोल कर नहीं देखता है कि इस नूर में इस कुरान में अल्लाह ने क्या फरमाया है। इसकी एक वजह यह है कि यह ईमान, यह हमारा ईमान

कानूनी ईमान है जिसकी वजह से हम एक दुसरे इंसान को सिर्फ मुसलमान समझते हैं।

छोटों में इताअ़त है, ना शफ़कत है बड़ों में,
प्यारों में मुहब्बत है, ना यारों में वफा है।।

याद रखिए –

असल ईमान, सच्चा ईमान तो वो है जो दिल में दाखिल हो जाए, दिल में घर कर जाये। याद रखिये जब तस्दीकुम बिल क़ल्ब होगा तब मुसलमान के तकाज़े अमली पैदा होंगे।

एक हदीस मुबारक है कि –

देखो तुम में से कोई इंसान मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि उसकी ख्वाहिशे नफ़्स ताबेअ़ ना हो जाये उस शरीयत के, उस कानून के, उस हिदायत के जो आप मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैही वस्सल्लम) लेकर आये हैं।

मेरे भाईयों अपने दिल में झांकिये। शर्मशार हो जाईये। रो रो कर अल्लाह से माफी मांगिये । और याद रखिए – अगर अमलन ताबेअ़ नहीं हुए तो हकी़कतन मोमिन कैसे हो सकते हैं ?

कुछ पल के लिए दुनिया की बातों व ख्वाहिशों को दर किनार करते हुए अपने दिल को अल्लाह की याद में लगाने की कोशिश करिये और अपने आप से पुछिये कि –

क्या हम सच में इकरारुम बिल क़ल्ब वाला ईमान रखते हैं ?
क्या हम ये ईमान रखते हैं कि मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैही वस्सल्लम) अल्लाह के रसूल है ?
क्या हम सच में ये मानते हैं कि कुरान एक एसी किताब है, जिसमें हमारे लिए रौशन हि़दायात है ?
क्या हम सच में यह मानते हैं कि कुरान अल्लाह ही का कलाम है?

याद रखिए कि हमारे प्यारे नबी (सल्लल्लाहो अलैही वस्सल्लम) ने एक बार फरमाया कि –

खुदा की कसम फुलां शख्स मोमिन नहीं हो सकता है । खुदा की कसम फुलां शख्स मोमिन नहीं हो सकता है । खुदा की कसम फुलां शख्स मोमिन नहीं हो सकता है ।

तीन बार मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैही वस्सल्लम) ने जब ये कहा तब यह सुनकर सहाबा कांप गये कि कौन बदबख्त है जिसके बारे में आप मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैही वस्सल्लम) फरमा रहे हैं?

फिर आप मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैही वस्सल्लम) से पुछा गया कि –
ए अल्लाह के महबूब आप ही बताएं कि वह कौन शख्स है?

तब अल्लाह के प्यारे रसूल मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैही वस्सल्लम) ने कहा –

वो शख्स जिसकी शरारतों की वज़ह से उसका पड़ोसी चैन में नहीं है। अमन में नहीं है। वो शख्स मोमिन नहीं है, खुदा कि कसम नहीं है, खुदा कि कसम नहीं है।

अब आप लोग ही सोचिये कि "कैसे ईमान को अमाल से और अखलाक से अलग कर लेंगे हम।"

आप मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैही वस्सल्लम) ने फरमाया कि –
तुम में से कोई शख्स मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि मैं उसे मेहबूब तर ना हो जाउं उसके मां बाप से भी, उसके बच्चों से भी, और तमाम इंसानों से ।

अल्लाह हमारे दिलों में भी अल्लाह और प्यारे रसूल मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैही वस्सल्लम) की सच्ची – पक्की मुहब्बद पैदा कर दे !!

अल्लाह के नाम पर ,अल्लाह के नबी के नाम पर झुमने वालों अब जरा अपने दिल में झांक कर देखने का वक्त आ गया है कि हम यह सोंचें कि आखिर मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैही वस्सल्लम) क्योंकर इन सबसे बढ़कर महबूब हो जायें ?

याद रखिए ––

–– क्योंकि आप मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैही वस्सल्लम) के ज़रिये ही तो हमें कुरान मिली।

–– हमें आप (सल्लल्लाहो अलैही वस्सल्लम) के जरिये ही तो हिदायत नसीब हुआ है।

–– आप (सल्लल्लाहो अलैही वस्सल्लम) के जरिये ही तो हम अल्लाह से जुड़े। और अपने आप को मुसलमान कहा ।

हिदायत हमें मिली है मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैही वस्सल्लम) के जरिये, तो अब जरा सोचें कि आप मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैही वस्सल्लम) से बढ़कर महबूब भला कौन हो सकता है।

एक बार का वाकिया है कि अल्लाह के प्यारे नबी मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैही वस्सल्लम) ने उमर रदियल्लाहु अन्हो से पुछा कि

ए उमर! तुम्हें मुझसे कितनी मुहब्बत है?

उमर रजियल्लाह अन्हो ने कहा कि ए नबी! आप मुझे दुनिया के हर इंसान से ज्यादा महबूब हैं।

यह सुनकर नबी (सल्लल्लाहो अलैही वस्सल्लम) ने फरमाया और तुम्हारी जान से ?

तब हजरत उमर रजि. ने ज़रा सा तवक्कुफ किया,दिल में झांके और

कहा कि अब मैं यह भी कहता हुं कि आप मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैही वस्सल्लम) मेरी जान से भी बढ़कर महबूब हैं। तब प्यारे नबी (सल्लल्लाहो अलैही वस्सल्लम) ने कहा कि उमर ! अब पहुंचे हो जो मक़ाम है।

हुक्में खुदा है कि नबी (सल्लल्लाहो अलैही वस्सल्लम) की ताज़ीम और तौकीर करें ।

आईये ज़रा ताज़ीम का दर्ज़ा जाने कि कुरान क्या कहता है प्यारे नबी मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैही वस्सल्लम) की ताज़ीम के बारे में –

ऐ इमान वालों! कभी अपनी आवाज़ को नबी की आवाज़ से बुलन्दतर मत कर देना। कहिं ऐसा ना हो जाये कि तुम्हारे सारे आमाल बेकार हो जायें और तुम्हे खबर तक ना हो।

क्या आज का मुसलमान अपनी आवाज को नबी की आवाज से पस्त रखता है ?
आखिर हम कैसे अपनी आवाज को पस्त रखें ?
याद रखिए कि अगर कोई यह कहे कि नबी (सल्लल्लाहो अलैही वस्सल्लम) ने यह कहा है अथवा कोई हदीस बताते हुए कहे कि नबी ने इस हदीस को कहा है तो हमें चाहिए कि हम उस शख्स की बात का इंकार न करें। मगर हां, आप स्वयं भी उस शख्स के द्वारा कहे गए कथन की जांच कर सकते हैं कि क्या सच में नबी (सल्लल्लाहो अलैही वस्सल्लम) ने कहा है। और हदीस की किताबों से जांच पड़ताल करे बिना बिल्कुल भी हदीस का इंकार ना करें।
हमारे नबी ने जो फरमाया है, आज के जमाने की चका चौंध को देखते हुए, चन्द दुनियावी खुशियों के लालच में यह कभी ना कह देना कि नबी की बातें सिर्फ उनके समय तक के लिए ही थी। ऐसा कभी ना हो कि उनकी कही बातों को काटते हुए आप अपनी राय, अपनी बातों पर अड़े रहें।

- हमारे नबी मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैही वस्सल्लम) को तो सारे जहान वालों के लिए रहमत बना कर भेजा गया है।

- मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैही वस्सल्लम) की असल अज़्मत एक नबी और रसूल की हैसियत से है।

- और मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैही वस्सल्लम) का मुकाम तो वो है जहां जिबरईल के भी पर जल जायें।

- आप और हम क्या अंदाज़ा लगायेंगे और क्या अंदाजा लगा सकते हैं कि क्या मुकाम है हमारे प्यारे नबी मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैही वस्सल्लम) का ।
  आज हमारी सुस्ती के कारण, हमारी बद मिजाजी के कारण, हमारे बद अखलाकी के कारण हमारे नबी की शान में लोग गुस्ताखियां कर रहें हैं।

बड़ी ही शर्म की बात है कि हम तो खुद ही अल्लाह और रसूल (सल्लल्लाहो अलैही वस्सल्लम) की ना'फरमानियां कर रहे हैं। एक मुसलमान से खुद मुसलमान झगड़ रहा है। भाई अपने ही भाई के खून का प्यासा हो गया है। सगे भाईयों का आपस में ही नहीं बनता है। दुनिया के सामने आज हम जिस हाल में अपने आप को रखते हैं, उसको ही देख कर गैर मुस्लिम हमारे मज़हब का क्या अंदाजा लगाता होगा, ज़रा सोचिए, उसके दिलो दिमाग में यही बात आयेगी कि शायद मुसलमान ऐसा ही होता है। कितनी शर्म की बात है कि हमारे बुरे आमाल, हमारी बद अखलाकी के कारण हमारा मज़हब बदनाम हो रहा है।

हम खुद ही अपने दीन व मज़हब की बदनामी की असल वज़ह हैं। और हम गैर/बदनाम करने वालों को बुरा – भला कहने लगते हैं। लेकिन खुद के गिरहबान में कभी झांकते तक नहीं हैं। खुद को सुधारने की कभी नहीं सोचा करते हैं।

जिस दीन ने गैरों के थे दिल आ के मिलाए
उस दीन में खुद भाई से अब भाई जुदा है।।

याद रखिए –

हमारे नबी ऐसा रोज़ा भी रखते थे जैसा कि उन्होने आज रोज़ा रखा और फिर शाम में इफ्तार नहीं किया । रोजा पूरी रात चल रहा है और दुसरे दिन तक चल रहा है। कई बार आपने तीन दिन का भी रोजा रखा है।

सहाबा ने कहा कि या रसूलल्लाह (सल्लल्लाहो अलैही वस्सल्लम) हमें भी हुक्म दीजिये की हम भी ऐसा रोजा रखें ।

तब नबी (सल्लल्लाहो अलैही वस्सल्लम) ने कहा –

तुम में से कौन है मुझ जैसा? मैं तो अपने रब के पास रात गुजा़रता हुं। वो मुझे खिलाता और पिलाता है।।

यह है हमारे नबी व आखिरी रसूल मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैही वस्सल्लम) का मतरबा ।

हम क्या समझेंगे कि क्या है शान आप मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैही वस्सल्लम) की । नबी की शान तो एक नबी ही समझ सकता है और हमारे नबी की शान सबसे आला है।

''ए अल्लाह के प्यारे और सच्चे नबी!
ऐ सारे आलम के लिए रहमत बनकर आने वाले!
ए अल्लाह के महबूब रसूल !
ए मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैही वसल्लम !

आपकी शान का हक तो हम गुनाहगारों से अ़दा हो ही नहीं सकता, हां बस हम यह जानते हैं कि अल्लाह पाक के बाद आपका ही मुकाम है।

बेशक, अल्लाह ही जानता है, आप मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैही

वस्सल्लम) का मरतबा ।।

ए अल्लाह हमें माफ करना और लोगों खबरदार हो जाओ ! कि हम इंसान प्यारे नबी ए अकरम की शान बयान करने लगें तो कहीं तौहीन ना कर बैठें।

कुछ लोग कहते हैं कि अल्लाह दुनियावी जज/न्यायाधिश के समान हैं और मुहम्मद एक वकील के समान हैं । और जज से वकील के जरीये काम करवाया जाता है।
हां, यह सच है कि जज से वकील करीब होता है। लेकिन अल्लाह की तुलना जज से करने की गुश्ताखी मत कीजिए और नबी (सल्लल्लाहो अलैही वस्सल्लम) की तुलना वकील से मत करिये।
कई बार ऐसा होता है कि जज का निर्णय बेगुनाह के खिलाफ होता है। और वकील तो बेगुनाह को गुनाहगार साबित करना अच्छे से जानता है।
सावधान ! सावधान ! सावधान !
अल्लाह और रसूल की तुलना किसी से कर के तौहीन मत कर जाना, वरना सारी नेकियां बरबाद हो जावेंगी।
याद रखिए !
अल्लाह हमारा रब है। पालनहार है।
और मुहम्मद हमारे नबी हैं (सल्लल्लाहो अलैही वस्सल्लम) ।
इनकी मिस्ल पुरे नौ इंसानी में कोई भी कभी भी नहीं हो सकता।
इनकी शान तो नबीयों में भी सबसे आला है।

- आईये अब अल्लाह से सच्ची तौबा करते है कि –
- ऐ अल्लाह सुब्हानहु व तआ़ला तेरा अहसान है हम पर कि तुने हमें मुसलमान बनाया। तुने हमें कुरान दिया जो रौशन हिदायत है।
- अपने महबूब मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैही वस्सल्लम) का उम्मती बनाया।

- ए अल्लाह तु हमें माफ कर दे। और हमें कुरान को समझकर पढ़ने वाला बना दे।
- ए अल्लाह तु हमें नबी (सल्लल्लाहो अलैही वस्सल्लम) की सुन्नतों पर अमल करने वाला और नबी की सुन्नतों को दुनिया में आम करने वाला बनादे।
- ए अल्लाह आज जो तस्वीर इस्लाम की हमारी वजह से बनी है उसके लिए हम गुनाहगारों को माफ कर दे।

और आईये अहद करें कि –

हमने इस्लाम की जो सारी दुनिया के सामने हमारे बुरे करतूतों के कारण जो खराब छवी/तस्वीर/ईमेज़ बना रखी है उसको अल्लाह के हुक्म का पालन करते हुए मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैही वस्सल्लम) की सुन्नतों पर अमल करते हुए सुधारने की कोशिश करेंगे। खुद की और दुनिया के लोगों की इस्लाह कि कोशिश करेंगे।

खुद भी भलाई करेंगे और दुसरों को भी भलाई की बात बतावेंगे। दुनिया के सामने इस्लाम व मुसलमान की वो तस्वीर बनाएंगे जिसको देखकर लोग कहेंगे कि

हां, ये है असल इस्लाम !!!

सबसे पहले हम अपने आप को सुधारेंगे, अपने घर का माहौल सुधारने की कोशिश करेंगे। फिर अपने दोस्तों, रिश्तेदारों में।

याद रखिये और ध्यान से समझने की कोशिश करिये कि –

एक मुसलमान दिन रात शराब में मुब्तिला रहता है। और जब वो अल्लाह के खौफ से शराब को हमेशा के लिए पीना छोड़ देता है, तो अन्य शराबी जो शराब पीने में उसका सांथ देते थे वो खुद ब खुद उस मुसलमान से किनारा करने लगेंगे।

कभी गौर किया है आपने कि –

जब वही मुसलमान शराब छोड़कर नमाज की पाबंदी करने लगता है, नबी की सुन्नतों पर अमल करने लगता है तो अल्लाह का

एसा अहसान उस पर होता है कि उसके शराबी सांथी उससे दूर हो जाते हैं। और अगर उससे मिलना चाहें तो बगैर नशा किये मिलने जाना पसंद करेंगे। और सांथ ही सांथ दुसरे नेक मुसलमान उस शराब छोड़ने वाले मुसलमान की दोस्ती पसंद करने लग जाते हैं। आपस में बैठकर दीन,इस्लाम की बात करने लगते हैं। कितना ही अच्छा काम होने लगता है इस्लाह का।

याद रखिये कि –

मेरे नबी मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैही वस्सल्लम) की अज़मत क्या है? इस बात को कुछ हद तक समझने का एक पहलू है जिसके जरिये नबी (सल्लल्लाहो अलैही वस्सल्लम) की अज़मत हम समझने की कोशिश कर सकते है –

- क्या आपने सोचा है की मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैही वस्सल्लम) एक इंसान की हैसियत से क्या हैं?
- आप एक बाप की हैसियत से क्या हैं?

"एक बहुंत ही प्यारा वाकिया है जो शायद ज्यादा तक लोगों ने सुना ही होगा कि –

मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैही वस्सल्लम) की बेटी फातिमा रदियल्लाहो तआला अन्हा हाज़िर होतीं हैं और मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैही वस्सल्लम) से कहतीं हैं कि अब्बा जान! चक्की पीस पीस कर हथेलियों पर गटठे पड़ गये हैं। कुंवे से पानी लाती हुं, जिससे कि निशान पड़ गये हैं।

ए हुज़ूर ! अब तो आम लोगों पर भी आसानी हो गई है। लोगों के यहां कनीज़ें भी आ गई हैं।... मुझे भी कोई कनीज़ अ़ता हो जाए !

ज़रा सोचिए कि मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैही वस्सल्लम) की प्यारी और लाडली बेटी ने जब यह कहा होगा तो क्या बीती होगी आप (सल्लल्लाहो अलैही वस्सल्लम) के दिल में । लेकिन प्यारे नबी ने कहा – बेटी ! ये दुनिया की चीजें हमारे लिए नहीं है। मैं तुमको उससे भी बेहतर चीज़ देता हुं, तस्बीह–ए–फातिमा ।।। "

क्या आपने कभी गौर किया है कि मुहम्मद असल जिन्दगी में एक इंसान की हैसियत से क्या हैं ?

ए लोगों आइये देखें कि मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैही वस्सल्लम) कैसे हैं एक इंसान की हैसियत से, और दिल में झांक कर देखिये कि आज हम मुसलमान एक मुसलमान की हैसियत से, मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैही वस्सल्लम) के गुलाम की हैसियत से कैसे हैं –

मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैही वस्सल्लम) हाकिम भी हैं।
मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैही वस्सल्लम) सिपहसालार भी हैं।
मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैही वस्सल्लम) बीवियों वाले भी हैं।
मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैही वस्सल्लम) औलाद वाले भी हैं।
मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैही वस्सल्लम) जुम्मे के खतीब भी हैं।
मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैही वस्सल्लम) पंजवक्ता ईमाम भी हैं।
मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैही वस्सल्लम) मुदर्स्सिरे कुरान भी हैं।
मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैही वस्सल्लम) सच्चा भी है।
मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैही वस्सल्लम) अमानत दार भी है।
मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैही वस्सल्लम) वफादार भी है।
मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैही वस्सल्लम) बड़े बुजुर्गों की अ़–ज़मत, छोटों पर शफ्फक़त, रिश्तेदारों से मुहब्बत करने वाला है।
मुहम्मद रहम करने वाला है।
मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैही वस्सल्लम) दोस्तों से हमदर्दी, कौम की खिदमत, अ़ज़ीज़ों की ग़म ख्वारी, गरीबों और मुफ्लिसों की मदद करने वाला है।
मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैही वस्सल्लम) अपने दुश्मनों के सांथ नेक बरताव करने वाला है।
मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैही वस्सल्लम) मुज़म्मिल भी हैं। मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैही वस्सल्लम) मुदस्सिर भी हैं।
और हर मैदान में मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैही वस्सल्लम) का

बुलन्द तरीन मुकाम है।

हमारे नबी (सल्लल्लाहो अलैही वस्सल्लम) की सारी जिन्दगी बेहतरीन अख्लाक का खज़ाना है।

- सारी दुनिया में कोई भी शख्सियत आप मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैही वस्सल्लम) के बराबर हो ही नहीं सकती ।
- हमारे प्यारे नबी मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैही वस्सल्लम) को यह भी गंवारा ना था की किसी से अपनी व्यक्तिगत काम के लिए मदद मांग लें।
- हमारे नबी (सल्लल्लाहो अलैही वस्सल्लम) को जो दीन–ए–इस्लामी निज़ाम कायम करने दिया गया, उन्होंने अपनी ज़िन्दगी में अल्लाह के हुक्म से उस इस्लामी निज़ाम को कायम करके दिखाया। दीन ए हक को पूरी ज़िन्दगी के निज़ाम पर गालिब करके दिखाया, जो आप मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैही वस्सल्लम) से पहले किसी नबी ने नहीं किया।

मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैही वस्सल्लम) ने रिसालत का हक़ अदा कर दिया। अमानत का हक़ अदा कर दिया। हमारी खैर ख्वाही का हक अदा कर दिया । और गुमराही के अंधरों को छांट कर रख दिया ।

हर एक इंसान जो आज दुनिया में मौजूद है और एक इंसान जो कयामत तक आयेंगे उन तक कुरान को पहुंचाना अब हमारे जिम्मे में है। यह अब हमारी ज़िम्मेदारी है कि कुरान को उन तक पहुंचायें।

आज की दुनिया में ऐ मुसलमानों अल्लाह के नबी मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैही वस्सल्लम) की सीरत का मुताऐला करीये। जानिए हमारे नबी की जिन्दगी के अहम पहलुओं को ।

मेरे मुसलमान भाईयों ! ज़रा सोचिए कि असल में इस्लाम का सबसे बड़ा क्रिमिनल भला कौन है ?

आज का गुनहगार – मुसलमान !!!

जी हॉ , हम मुसलमान खुद ही हैं इस्लाम के आज के असल अपराधी । हम मुसलमान ही आज इस्लाम के अव्वल दर्ज़े के क्रिमिनल बन गये हैं। हमारे बुरे अमल की वज़ह से ही इस्लाम बदनाम हो रहा है। हमारी बद अख्लाकी के कारण ही लोगों के दिलों में हमारे लिए नफरत पैदा हो रही है।

जो कुछ भी है सब अपने ही हांथों के हैं करतूत ।
शिक्वा है ज़माने का ना किस्मत से गि़ला है।।
देखें हैं ये दिन अपनी ही ग़फलत की बदौलत।
सच है कि बुरे काम का अंजाम बुरा है ।।

अब वक्त आ गया है कि हमें अल्लाह से सच्ची और पक्की तौबा करनी चाहिये और नबी के सुन्नतों की पैरवी करनी चाहिए, कुरान को अपना इमाम बना लेंगे। भलाई वाला काम करेंगे। लोगों की मदद करेंगे। सच बात करेंगे। इस्लाम को अपनी जिन्दगी में समा लेंगे।

फिर ये दुनिया जो आज हमसे नफरत करने लगी है, ये मुहब्बत करने लगेंगे। दुनिया को तो तलाश है ऐसे निज़ाम की जो हक़ पर कायम हो। जहां लोगों के सांथ अद्ल और इंसाफ कायम हो। जिस निजा़म में सारी परेशानियां का हल हो।

इस्लामी निजा़म अल्लाह के हुक्म से ही कायम होना है, लेकिन इसके लिए हम सब मुसलमानों को दुनिया के सामने एक मिसाल कायम करके दिखाना ही होगा कि – इस्लाम अमन व

सूकून वाला मज़हब है।

इस्लाम ही है जो हमें सच्चा और अच्छा इंसान बनाता है, जो हमें असल में जिन्दगी जिने की राह दिखाता है, और जिन्दगी जिने की वजह भी बताता है।।

इस्लाम ही है जिसमें रहते हुए मुसलमान सच भी बोलता है। लोगों की मदद भी करता है। पड़ोसियों की मदद भी करता है। लोगों पर अहसान भी करता है। चोरी भी नहीं करता है। मां बाप की फरमा बरदारी भी करता है। किसी भी गैर मज़हबी के मज़हब को बुरा भी नहीं कहता है। इमानदार होता है। भाई – भाई से मुहब्बत भी करता है। और हर वो खूबी मुसलमानों में आ जानी चाहिए जिसके होने का अल्लाह और उसके रसूल ने हुक्म दिया है।

इसके बाद हम देखेंगे कि आज जो हमसे नफरत कर रहे हैं, जो हम पर जुल्म कर रहे हैं वो लोग हमसे मुहब्बद करने लगेंगें, हमारी इज्ज़त करने लगेंगे।

आज दुनिया को तलाश है नेक और फरमां बरदार लोगों की ।

याद रखिए हमारे नबी ने फरमाया –

किसी अ़रब को किसी अज़मी पर कोई फज़ीलत नहीं।
किसी अज़मी को किसी अरब पर कोई फजी़लत नहीं ।
किसी गोरे को किसी काले पर कोई फजी़लत नहीं ।
और किसी काले को किसी गोरे पर कोई फज़ीलत नहीं।
हां !! मगर तक़्वा के सांथ।

यहां एक बात साफ है कि हममें से बेहतरीन वो इंसान होगा जो तक़्वा इख्तियार करेगा। जो परहेज़गार होगा। जो अल्लाह के हुक्म की पाबंदी करेगा। खुद भी भलाई करेगा और लोागों को भी भलाई का हुक्म देगा और बुराई से मना करेगा। अल्लाह के दीन/शरीयत के लिए काम करेगा नबी की सुन्नतों पर अमल करेगा। याद रखिए कि अल्लाह के दीन के लिए काम करना अल्लाह व नबी की मदद करना होता है।

इस्लाम में भेद – भाव बिल्कुल भी नहीं है। कोई भी अ़रब में रहने वाला दुनिया के किसी और कोनों में रहने वाले से बेहतर नहीं हो सकता है, और ना ही कोई गोरा,सफेद खुबसूरत इंसान किसी काले इंसान से बेहतर हो सकता है। कोई अमीर किसी गरीब से बेहतर नहीं हो सकता है। याद रखिए कि हम और आप में सबसे बेहतर वही इंसान होगा जिसके आमाल अच्छे होंगे, जो दीन ए हक पर कायम होगा।

प्यारे भाईयों ! हम मुसलमानों को चाहिए कि सोसाईटी में अपनी खराब ईमेज को सुधारने की कोशिश आज से ही चालू कर दें। सोसाईटी में अपनी इमेज़ एक मुसलमान के रुप में वैसे ही बनाएं जैसा कि कुरान में हुक्म है। इस्लाम को जाने। कुरान को पढ़ें। और अपनी जिन्दगी को बेहतर वा कामियाब बनाये। दीने हक की मिसाल सारी दुनिया में पेश करें।।।।

हसीन तोहफा –

याद रखिए आज दुनिया में अगर खून बह रहा है, तो सिर्फ मुसलमान का ही बह रहा है। दुनिया में जगह–जगह मुसलमान पिटा चला जा रहा है, क्यु ? जैसा कि मैं पहले ही बता चुका हु कि मुसलमान के असल दुश्मन हम "मुसलमान" खुद ही हैं। हमने अल्लाह व नबी के हुक्म की नाफरमानियां की हैं।

हमने कुरान को आज तक अपना इमाम नहीं माना है, तो दुसरों के सामने क्या पेश करेंगे। हमने कुरान लोगों तक नहीं पहुंचाया इसीलिये आज हम अल्लाह के अ़ज़ाब में हैं। आज दुनिया में डेढ़ बिलियन से भी ज्यादा मुसलमान हैं लेकिन इज्ज़त नाम की कोई चीज़ नहीं है। न जी–7 में, न जी–15 में हैं।

बहरहाल, अब हमारा और आपका पहला फर्ज ये है कि इस कुरान को लोगों तक पहुंचाया जाए। हुजूर का हुक्म है –

पहुंचाओ मेरी तरफ से अगरचे एक आयत ही क्युं ना हो।

याद रखिए, इस्लामी निज़ाम आएगा। इसे आना ही है। भले ही इसके आने से पहले हमें हमारी गुश्ताखी, नाफरमानी की और भी बड़ी से बड़ी सज़ा मिलनी बाकी होंगी। लेकिन दुनिया में अल्लाह का दीन कायम हो कर रहेगा। ये हो ही नहीं सकता कि दुनिया खत्म हो जाए और मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैही वस्सल्लम) का मकसद ए बेसद अभी मुक़म्मल ना हो । हरगिज़ नहीं ! याद रखिए कि ये हो ही नहीं सकता कि मुहम्मद को अल्लाह ने जमीन लपेट कर जो मगरिब व मशरिक दिखा दिये हों वहां अल्लाह का दीन कायम होने से पहले दुनिया खत्म हो जाये।

याद रखिए –

और भी दौर–ए–फलक हैं अभी आने वाले,
नाज़ इतना ना करें हमको सताने वाले ।।

इस हदीस पाक को अच्छी तरह से अपने दिलो दिमाग में बिठा लिजिय! यह मुस्लिम शरीफ की हदीस है – हमारे प्यारे नबी मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैही वस्सल्लम) ने फरमाया कि –

" अल्लाह ने मेरे लिए पूरी ज़मीन को लपेट दिया। मैनें उसके सारे मशरिक देख लिए और सारे मग़रिब देख लिए। मेरी उम्मत की हुकूमत उन तमाम इलाकों में कायम हो कर रहेगी जो अल्लाह ने ज़मीन को लपेट कर मुझे दिखा दिया है । "

अब ज़रा हमें अपने दिल में झांक कर देखना होगा कि हमारे और आप के लिए सोचने वाला वक्त है या नहीं कि हम और आप आज कहां खड़े हैं?

क्या हम अल्लाह के सांथ खड़े हैं? या हम दीन ए इस्लाम के खिलाफ और दुश्मनें इस्लाम के सांथ खड़े हुए हैं?

आज हमारी जो बदहाली हो रही है, जो हम पर जुल्मों सितम हो रहे हैं, जो खून हमारा बहाया जा रहा है इन सब की वज़ह सिर्फ और सिर्फ अल्लाह व नबी (सल्लल्लाहो अलैही वस्सल्लम) से दूरी, कुरान से दुरी, नबी (सल्लल्लाहो अलैही वस्सल्लम) की नाफरमानी, कुरान की नाफरमानी ही है।

याद रखिये! मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैही वस्सल्लम) की पेशनगोई कभी गलत नहीं हो सकती।
इस्लामी निज़ाम पूरी दुनिया में क़ायम हो कर रहेगा। ये इन्कलाब ज़रुर आयेगा।
जब मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैही वस्सल्लम) के ज़रिये आया तो जो लोग हुज़ूर के सांथी बन गये, उनकी दुनिया व आखिरत संवर गयी।

दुनियां को है फिर मारकए रुहो बदर पेश
तहज़ीब ने फिर अपने दरिन्दों को उभारा,
अल्लाह को है पाबन्दिये मोमिन पे भरोसा
इब्लीस को है यूरोप की मशीनों का सहारा ।।

मेरी इल्तेजा है सभी से कि कुरान पाक को समझकर पढ़िये, जिस भाषा का आपको सबसे अच्छा ज्ञान हो आप उस भाषा में कुरान को पढ़िये और समझिये । अगर आपको पढ़ना नहीं आता तो कुरान को दुसरों से सुनिये। आज तो इंटरनेट में कुरान तर्जुमें के सांथ उपलब्ध हो गये हैं।

क्या हम कभी ये जानने की कोशिश नहीं करेंगें कि जिस रब ने हमें दुनिया में भेजा, वह हमसे क्या कहना चाहता है। कुरान तो अल्लाह का कलाम है।

कुरान पढ़ते समय आप महसूस करेंगे कि अल्लाह आपसे बात कर रहा है। और कुरान पाक में जो अल्लाह का हुक्म है उसको लोगों को भी जरुर बताईये।

याद रखिए, कुरान ही तो है जो इंसानों को बदलता है। जिस किसी ने भी कुरान को अपना इमाम बना लिया , ये कुरान उसके अंदर इंकलाब पैदा कर देता है।

अगर हमें अपनी तंगदस्ती, बदहाली, परेशानी, दुनिया में हमारी करतूतों की वजह से जो ज़िल्लतें हमें मिल रही है इन सबसे निज़ात पाना है तो हमें कुरान को समझकर पढ़ना ही होगा। इसे कुरान पाक को अपना इमाम बनाना होगा। कुरान इंसानों को बदलता है। उनके अंदर इंकलाब पैदा करता है। और फिर इंसान मिलकर अपने आस पास के माहौल को बदलते हैं, निज़ाम को बदलते हैं।

आईये, हम सभी अब अपनी इमेज़/छवी दुनिया के सामने सुधारने की कोशिश करेंगे। हमें करना तो बस इतना ही है कि हमें अपने आप को बदलना है। बुराई के काम छोड़कर अच्छे काम करने हैं। लोगों की इज्ज़त करनी है।
अल्लाह व रसूल के हुक्म व सुन्नतों के मुताबिक जिन्दगी बिताने की कोशिश करना है। इंशा अल्लाह !! जो लोग हमसे नफरत कर रहे हैं, वे हमसे, हमारे दीन से मुहब्बत करने लगेंगे।।

आईए! हम सभी मुसलमान अब इस्लाम के आमने – सामने न हो कर, इस्लाम के क्रिमिनल न बन कर, इसके सांथ हो जाएं। दुनिया जहान में चैन व अमन कायम करें ।।

फरियाद है ऐ कश्तिये उम्मत के निगेहबां,
बेड़ा ये तबाही के करीब आने लगा है।।

।। अपनी दुआओं में मुझे ज़रुर याद रखें ।।